राज्य में पहली बार नवजात की हार्ट सर्जरी के बाद एकमो ने बचाई जान

जयपुर/लोकमत।

फॉर्टिस एस्कॉर्ट्स हास्पिटल जयपुर में एक नवजात की जटिल हृदय शल्य चिकित्सा के दौरान अनूठी एकमो तकनीक का प्रयोग किया गया। इस विधि में रोगी के फेफड़ों और हृदय को बाहरी लाइफ सपोर्ट देकर बचाया जाता है और रोगी को एक नया जीवन प्रदान किया जाता है।

एक्सट्रा कासोरिल मेंब्रेन ऑक्सीजनेशन तकनीक (एकमो) डिवाइस एक जीवन रक्षक उपकरण है जिसकी भूमिका शल्य क्रिया के दौरान रोगी के हृदय और फेफड़ों तक कृत्रिम ऑक्सीजन पहुंचना है। यह तकनीक उन रोगियों पर इस्तेमाल की जाती है जो परम्परागत तरीके से सांस लेने में असमर्थ होते हैं।

इस प्रणाली में रोगी की किसी एक धमनी को इस उपकरण से जोड़ दिया जाता है, नतीजतन बाइपास तकनीक से पूरे शरीर में रक्त प्रवाह निरंतर बना रहता है। एकमो एक प्रकार से अस्थाई जीवन रक्षक प्रणाली है जिसके द्वारा हृदय या फेफड़ों की परम्परागत गतिविधि में अवरोध आने पर मरीज को ऑक्सीजन दी जाती है ताकि वे अपनी क्रिया सटीक तरीके से पूरी कर सकें। इसके लिए रोगी की एक धमनी में केनूला के माध्यम से इस उपकरण को जोड़ दिया जाता है, जिससे मरीज का रक्त इस डिवाइस से होकर गुजर सके, इस डिवाइस में आने वाले रक्त को पम्प कर ''मेम्ब्रेन ऑक्सीजनरेटर प्रणाली'' से निकालता है, जो फेफड़ों की तरह काम कर गैस एक्चेंज प्रक्रिया को पूरा करती है, इस प्रक्रिया के दौरान रक्त में शामिल कार्बन डाई ऑक्साइड स्वत: हट जाती है, और उसके स्थान पर ऑक्सीजन चली जाती है। एकमो सर्किट का नियंत्रण एकमो विशषज्ञ टीम करती है। फॉर्टिस एस्कॉर्ट्स हास्पिटल जयपुर के नियोनेटल इन्टेसिव केयर युनिट में यह सुविधा उपलब्ध है जिसका प्रयोग नवजात शिशुओं का हृदय और फेफड़े सही तरीके से काम नहीं करने पर ही किया जाता है। यह नवजात शिशुओं की जीवन रक्षा करने में 75 प्रतिशत प्रभावी है।

नवजात की हार्ट सर्जरी के बाद एकमो ने बचाई जान

जयपुर (मोन्यू)। फॉर्टिस एस्कॉर्ट्स हास्पिटल ने एक नवजात की जटिल हृदय शल्य चिकित्सा के दौरान अनूठी एकमो तकनीक का प्रयोग किया है। इस विधि में रोगी के फेफड़ों और हृदय को बाहरी लाइफसपोर्ट देकर बचाया जाता है। एक्सट्रा कासोरिल मेंब्रेन ऑक्सीजनेशन तकनीक (एकमो) डिवाइस एक जीवन रक्षक उपकरण है, जिसकी भूमिका शल्य क्रिया के दौरान रोगी के हृदय और फेफड़ों तक कृत्रिम ऑक्सीजन पहुंचाई जाती है। इस यह तकनीक उन रोगियों पर इस्तेमाल की जाती है।

डॉ. एस.के. कौशल ने 17 दिन के एक नवजात शिशु की इस प्रणाली से जटिल हृदय शल्य चिकित्सा 'आर्टियल स्विच ऑपरेशन ट्रांसपोजिशन ऑफ ग्रेट आर्टरीज' की। यह ऑपरेशन करीब 11 घंटे चला। इस दौरान नवजात को एकमो तकनीक से बाह्म लाइफ सपोर्ट प्रदान किया गया, ताकि उसके हृदय और फेफड़ों को कुछ समय के लिए काम नहीं करना पड़े और मरीज को राहत भी मिलती रहे। सर्जरी पूर्ण होने के बाद एकमो मशीन से निश्चित मात्रा में रक्त शिशु के शरीर में प्रवाहित किया गया ताकि उसके हृदय को अतिरिक्त भार नहीं झेलना पड़े। तीन दिन की इस प्रक्रिया और जटिल हृदय चिकित्सा के बाद अब यह शिशु एकदम स्वस्थ है।

जयपुर में एकमो तकनीक से नवजात की हार्ट सर्जरी

जयपुर (कासं)। फॉर्टिस एस्कॉर्ट्स हॉस्पिटल जयपुर में एक नवजात की जटिल हृदय शल्य चिकित्सा के दौरान एकमो तकनीक का प्रयोग किया गया। इस विधि में रोगी के फेफड़ों और हृदय को बाहरी लाइफ सपोर्ट देकर बचाया जाता है। फॉर्टिस एस्कॉर्ट्स हास्पिटल जयपुर में डॉ. एस.के. कौशल ने एक्सट्रा कासोरिल मेंब्रेन ऑक्सीजनेशन तकनीक (एकमो) डिवाइस एक जीवन रक्षक उपकरण है जिसकी भूमिका शल्य क्रिया के दौरान रोगी के हृदय और फेफड़ों तक कृत्रिम ऑक्सीजन पहुंचना है। डॉ. कौशल ने 17 दिन के एक नवजात शिशु की इस प्रणाली से जटिल हृदय शल्य चिकित्सा 'आर्टियल स्विच ऑपेरान ट्रांसपोजिान ऑफ ग्रेट आर्टरीज' की। यह ऑपरेशन करीब 11 घंटे चला। इस दौरान नवजात को एकमो तकनीक से बाह्य लाइफ सपोर्ट प्रदान किया गया, ताकि उसके हृदय और फेफड़ों को कुछ समय के लिए काम नहीं करना पड़े और मरीज को राहत भी मिलती रहे। सर्जरी पूर्ण होने के बाद एकमो मशीन से निश्चित मात्रा में रक्त शिशु के शरीर में प्रवाहित किया गया ताकि उसके हृदय को अतिरिक्त भार नहीं झेलना पड़े। हास्पिटल के जोनल डायरेक्टर प्रतीम तम्बोली ने बतायाकि अस्पताल में एकमो का सफलतम प्रयोग किए जाने से प्रदेशवासियों को काफी लाभ मिल सकेगा। समय रहते शिशुओं की चिकित्सा की जा सकेगी और उन्हें बाहर नहीं जाना पड़ेगा।

एकमो तकनीक से बच्चे के हार्ट का ऑपरेशन

17 दिन के एक नवजात का 11 घंटे चला ऑपरेशन

डेली न्यूज, जयपुर। फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हॉस्पिटल में एक नवजात की जटिल हृदय शल्य चिकित्सा के दौरान अनूठी एकमो तकनीक का प्रयोग किया गया। विधि में रोगी के फेफड़ों और हृदय को बाहरी लाइफ सपोर्ट देकर बचाया जाता है और रोगी को एक नया जीवन दिया जाता है। डॉ. एस.के. कौशल ने 17 दिन के नवजात की इस प्रणाली से जटिल हृदय शल्य चिकित्सा की। ऑपरेशन करीब 11 घंटे चला। सर्जरी पूरी होने के बाद एकमो मशीन से निश्चित मात्रा में रक्त शिशु के शरीर में प्रवाहित किया गया, ताकि उसके हृदय को अतिरिक्त भार नहीं झेलना पड़े। डॉ. कौशल ने बताया कि नवजात को यह जन्मजात विकृति थी। शिशु की जांच में पाया गया कि जटिलता को सर्जरी से दूर किया जा सकता है, 17 दिन के बच्चे की सर्जरी करना बड़ा जटिल काम था।

ऐसे काम करती है एकमो तकनीक

एक्सट्रा कासोरिल में ब्रेन ऑक्सीजनेशन तकनीक (एकमो) डिवाइस एक जीवनरक्षक उपकरण है जिसकी भूमिका शल्य क्रिया के दौरान रोगी के हृदय और फेफड़ों तक कृत्रिम ऑक्सीजन पहुचना है। यह तकनीक उन रोगियों पर इस्तेमाल की जाती है, जो परंपरागत तरीके से सांस लेने में असमर्थ होते हैं। इस प्रणाली में रोगी की किसी एक धमनी को इस उपकरण से जोड़ दिया जाता है। नतीजन बाइपास तकनीक में शरीर में रक्त प्रवाह निरंतर बना रहता है।

फोर्टिस हॉस्पिटल में एकमो तकनीक से बच्चे के हार्ट का सफल ऑपरेशन

जयपुर, (कासं)। राजधानी के फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हॉस्पिटल में एक सप्ताह दिन के बच्चे के हार्ट का एकमो तकनीक से जटिल ऑपरेशन कर उसे नया जीवन दिया गया है।

फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हॉस्पिटल के एडिशनल डायरेक्टर डॉ. एस.के. कौशल ने हाल ही में अस्पताल में 17 दिन के एक नवजात बच्चे के हार्ट की एक्सट्रा कार्पोरियल मेंब्रेन ऑक्सीजनेशन तकनीक (एकमो) से आर्टिफिशल स्विच ऑपरेशन ट्रांसपोजिशन ऑफ द ग्रेट आर्टरीज की गई। यह ऑपरेशन करीब 11 घंटे चला। इस दौरान नवजात को एकमो तकनीक से लाइफ सपोर्ट प्रदान किया गया। ताकि उनके हृदय और फेफड़ों को कुछ समय के लिए काम नहीं करना पड़े और मरीज को राहत भी मिलती रहे। सर्जरी पूरी होने के बाद एकमो मशीन से निश्चित मात्रा में रक्त बच्चे के शरीर में प्रवाहित किया गया जिससे कि उसके हृदय को अतिरिक्त भार नहीं झेलना पड़े। तीन दिन की इस प्रक्रिया और जटिल हृदय चिकित्सा के बाद अब बच्चा एकदम स्वस्थ है।' डॉ. कौशल ने बताया कि इस बच्चे को यह जन्मजात विकृति थी। उसकी जांच करने के बाद पता गया कि इस जटिलता को सर्जरी से दूर किया जा सकता है, महज 17 दिन के इस बच्चे की सर्जरी करना काफी कठिन काम था। लेकिन 11 घंटे एक अनथक प्रयास के बाद उसे बचा पाना संभव हो सका। उन्होंने बताया कि एक्सट्रा कार्पोरियल मेंब्रेन ऑक्सीजनेशन तकनीक (एकमो) डिवाइस एक जीवन रक्षक उपकरण है। उसकी भूमिका ऑपरेशन के दौरान रोगी के हृदय और फेफड़ों तक कृत्रिम ऑक्सीजन पहुंचना है। इस यह तकनीक उन रोगियों पर इस्तेमाल की जाती है जो पर्याप्तरूप से तरीके से सांस लेने में असमर्थ होते हैं। इस प्रणाली में रोगी की किसी एक धमनी को इस उपकरण से जोड़ दिया जाता है। नतीजतन बाहरपास तकनीक से पूरे शरीर में रक्त प्रवाह निरंतर बना रहता है।

फोर्टिस हॉस्पिटल जयपुर के डॉक्टरों ने 17 दिन के नवजात की एकमो तकनीक से हार्ट सर्जरी कर जान बचाई।

सार-समाचार

फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हास्पिटल जयपुर में

राज्य में पहली बार नवजात की हार्ट सर्जरी के बाद एकमो ने बचाई जान

जयपुर। फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हास्पिटल जयपुर में एक नवजात की जटिल हृदय शल्य चिकित्सा के दौरान अनूठी एकमो तकनीक का प्रयोग कया गया। इस विधि में रोगी के फेफड़ों और ह्रद्य को बाहरी लाइफसपोर्ट देकर बचाया जाता है और रोगी को एक नया जीवन प्रदान किया जाता हैं। एक्सट्रा कासोरिल मेंब्रेन ऑक्सीजनेशन तकनीक एकमो डिवाइस एक जीवन रक्षक उपकरण हैं जिसकी भूमिका शल्य क्रिया के दौरान रोगरी के हृदय और फेफड़ों तक कृत्रिम ऑक्सीजन पहुंचना हैं। इस यह तकनीक उन रोगियों पर इस्तेमाल की जाती है जो परम्परागत तरीके से सांस लेने में असमर्थ होते हैं। इस प्रणाली में रोगी को किसी एक धमनी को इस उपकरण से जोड़ दिया जाता हैए नतीजतन बाइपास तकनीक से पूरे शरीर में रक्त प्रवाह निरंतर बना रहता हैं। एकमो एक प्रकार से अस्थाई जीवन रक्षक प्रणाली है जिसके द्वारा हृदय या फेफड़ों की परम्परागत गतिविधि में अवरोध आने पर मरीज को ऑक्सीजन दी जाती हैं ताकि वे अपनी क्रिया सटीक तरीकें से पूरी कर सकें। इसके लिए रोगी की एक धमनी में केनूला के माध्यपम से इस उपकरण को जोड़ दिया जाता हैए जिससे मरीज का रक्त इस डिवाइस से होकर गुजर सकेंए इस डिवाइस में आने वाले रक्त को पम्प कर मेम्ब्रेन ऑक्सीजनरेटर प्रणाली से निकालता हैं जो फेफड़ों की तरह काम कर गैस एक्सचेंज प्रक्रिया को पूरा करती हैए इस प्रक्रिया के दोरान रक्त में शामिल कार्बन डाई ऑक्साइड स्वतरू हट हाती हैं और उसके स्थान स्थान पर ऑक्सीजन चली जाती हैं। एकमो सर्किट का नियंत्रण एकमो विशेषज्ञ टीम करती हैं।

फीता काटकर शुभारंभ किया।

एकमो तकनीक से 17 दिन के नवजात की जटिल हार्ट सर्जरी

हैल्थ रिपोर्टर | जयपुर

एकमो तकनीक के माध्यम से 17 दिन के नवजात की डॉक्टर्स ने सफल हार्ट सर्जरी की है। इस तकनीक से रोगी के फेफड़ों और ह्रदय को बाहरी लाइफ सपोर्ट देकर बचाया जाता है। 11 घंटे चले ऑपरेशन के दौरान नवजात को एकमो तकनीक से बाह्य लाइफ सपोर्ट दिया गया। ताकि उसके ह्रदय और फेफड़ों को कुछ समय के लिए काम नहीं करना पड़े। मरीज को राहत मिल सके। सर्जरी पूर्ण होने के बाद एकमो मशीन से निश्चित मात्रा में रक्त शिशु के शरीर में प्रवाहित किया गया। तीन दिन की इस प्रक्रिया बाद अब शिशु स्वस्थ है। ऑपरेशन डा. एस.के. कौशल ने किया। वे वर्तमान में एडिशनल डायरेक्टर फोर्टिस एस्कोर्ट्स हास्पिटल में हैं। कौशल ने बताया कि एक्सट्रा कार्पोरिया मेंब्रेन ऑक्सीजनेशन तकनीक (एकमो) डिवाइस एक जीवन रक्षक उपकरण है जिसकी भूमिका शल्य क्रिया के दौरान रोगी के ह्रदय और फेफड़ों तक कृत्रिम आक्सीजन पहुंचाया जाता है। यह तकनीक उन रोगियों पर इस्तेमाल की जाती है जो परंपरागत तरीके से सांस लेने में असमर्थ होते हैं।